काव्य प्रयोजन का शेषांश.

B.A III Hindi Hons.

डॉ॰ रश्मि चन्द्र पाठक

इसमें धन ~~की प्राप्ति~~ एवं, यश की प्राप्ति कवि का काव्य प्रयोजन है जबकि शेष सहृदयों का प्रयोजन है। जैसा कि ऊपर में कहा गया है कि अधिकांश आचार्यों की सम्मिलित ध्वनि प्रायः एक समान ही है तथापि मम्मट का काव्य प्रयोजन आने वाले समय में अधिक लोकप्रिय हुआ और उसकी चर्चा आगे भी होती रही।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि संस्कृत साहित्य में जो काव्य प्रयोजन माने गए उनमें एक बात सबमें समान है वह है - आनन्दानुभूति जिसे हेमचन्द्र ने रसानुभूति माना है। यह कवि एवं सहृदय दोनों के लिए समान है साथ ही अनिवार्य भी। उसके बाद अर्थ और यश कवि का गौण प्रयोजन हो सकता है। कान्तासम्मित उपदेश, व्यावहारिक ज्ञान की उपलब्धि - ये दोनों सहृदय का काव्य प्रयोजन है।

संस्कृत आचार्यों के समान ही हिन्दी के रीतिकालीन आचार्यों ने भी काव्य प्रयोजन पर गहरा चिन्तन किया है फिर भी रीतिकालीन आचार्यों के चिन्तन में मौलिकता का घोर अभाव है बल्कि कहें तो संस्कृत आचार्यों का पिष्टपेषण मात्र है। कुलपति ने काव्य प्रयोजन पर प्रकाश डालते हुए लिखा है:

जस सम्पति आनन्द अति दुरितन डारै खोइ।
होत कवित तें चतुराई, जगत राम बस होइ॥

यश, सम्पत्ति, अलौकिक आनन्द, दुःखों का नाश, लौकिक चातुर्य एवं कान्ता सम्मित उपदेश - ये छः काव्य के प्रयोजन हैं। स्पष्ट है कि मम्मट मत का कलेवर बदलकर यहाँ उपस्थित है।

वहीं आचार्य सोमनाथ ने भी प्रायः उपर्युक्त बातों को ही दुहराया है —

कीरति, वित्त, विनोद अरु अति मंगल को देति।
करै भलो उपदेश नित, सरस काव्य चित चेत॥

इसी प्रकार आचार्य भिखारीदास ने गोस्वामी तुलसीदास, सूरदास, केशवदास, और रहीम का उदाहरण देते हुए सम्पत्ति, यश, आनन्द और चतुर्वर्ग-फल-प्राप्ति को काव्य का प्रयोजन स्वीकार किया।

यद्यपि भिखारीदास ने इसे मौलिक बनाने का प्रयास अवश्य किया है। विभिन्न कवियों के नामोल्लेख से अपने कथन की सत्यता सिद्ध करने का प्रयास भी किया है, किन्तु इस कथन में मम्मट के काव्यप्रयोजन की छाया साफ-साफ दिखलाई पड़ रही है।

हिन्दी साहित्य के आधुनिक आचार्यों ने भी काव्य प्रयोजन पर विचार किया है। इन्होंने न तो संस्कृत आचार्यों का अन्धानुकरण किया है और न पिष्टपेषण। समय और परिवेश के साथ बदलते हुए सन्दर्भ में अपनी बातों का स्पष्टता से उल्लेख किया है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है - "लेखक का उद्देश्य सदा से यही रहा है कि उसके लेखों से पाठकों का मनोरंजन भी हो और साथ ही उनके ज्ञान की सीमा भी बढ़ती रहे।"

तात्पर्य यह कि आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की दृष्टि में साहित्य का प्रयोजन मनोरंजन अर्थात् आनन्द की प्राप्ति और ज्ञान की प्राप्ति है। उधर श्रीधर पाठक ने लोकमंगल को काव्य का मूल प्रयोजन माना है

मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा है -

केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।।

इसी प्रकार जयशंकर प्रसाद भी कहते हैं - संसार को दो तरह से काव्य के लाभ पहुंचते हैं - मनोरंजन और शिक्षा।"

किन्तु सुमित्रानन्दन पंत स्वांतः सुख एवं लोकहित - को काव्य का प्रयोजन मानते हैं।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि काव्य रचना का प्रयोजन है। उसमें आत्मानुभूति, लोक

कारण चाहे जो भी रहा हो, परन्तु निश्चित यही थी कि साहित्य का स्वर भक्तिभाव से परिपूर्ण हो चुका था। इस काल में भक्ति कवियों की बाढ़ सी आ गयी। क्या हिन्दू तथा मुसलमान सभी भक्ति के प्रवाह में आनन्दमग्न हो रहे थे। रामकाव्यधारा, कृष्णकाव्यधारा, संतकाव्यधारा तथा प्रेमाश्रयीकाव्यधारा के विभिन्न आयामों में साहित्यिक रचनाओं को वर्गीकृत किया जा सकता है। इसी काल में गोस्वामी तुलसीदास, सूरदास, कबीरदास, मलिक मुहम्मद जायसी, वल्लभाचार्य, नन्ददास, छीतस्वामी, कुम्भन, मंझन, रैदास, सुन्दरदास, मीराबाई प्रमुख साहित्यकारों ने अपनी प्रतिभा और समर्पण तथा अभिनव उद्गारों से हिन्दी साहित्य के कोष में अभिवृद्धि की। हिन्दी साहित्य के इतिहास का यह काल संभवतः समस्त कालों से इतर होगा जिसमें ~~समाज~~ सामाजिक ~~भक्ति~~ वास्तविकताओं से सर्वथा भिन्न साहित्य की रचना हो रही थी। भक्ति का यह भाव हिन्दी साहित्य में बहुत बड़े कालखंड में छाया रहा। इस काल में ही गोस्वामी तुलसीदास ने विनय पत्रिका, कवितावली, गीतावली, रामचरितमानस जैसे श्रेष्ठ काव्य ग्रंथों का सृजन किया। रामचरितमानस हिन्दी साहित्य का, संभवतः विश्व साहित्य का श्रेष्ठतम ग्रंथ है जिसमें साहित्यिक विशेषताओं के साथ ही सामाजिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का चरम विकास हुआ है। जनजीवन को यह देखकर आश्चर्य होता है कि रामचरितमानस की प्रति समस्त हिन्दू भाषाभाषी के घर में अवश्य पायी जाती है। सच पूछा जाए तो रामचरितमानस ने हमारे समाज को संगठित एवं सुसंस्कृत करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। इस ग्रंथ ने हमारे समक्ष एक ऐसे आदर्श परिवार, आदर्श समाज एवं आदर्श राज्य की परिकल्पना की है जो सुव्यवस्था एवं विकास का चरम बिन्दु है।

इसी प्रकार सूरदास ने कृष्ण के बाल एवं किशोर जीवन का ऐसा सांगोपांग चित्रण किया है कि मन प्रेम एवं भक्ति में आप्लावित हो जाता है। सूरदास के सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि वे जन्मांध थे। किन्तु उनके विपुल साहित्य के अध्ययन से ऐसा प्रतीत नहीं होता। बाल मनोविज्ञान की जैसी सूक्ष्म